पूरक पाठ्यपुस्तक : संचयन भाग 2

हरिहर काका (मिथिलेश्वर)

पाठ का सारांश

लेखक और हरिहर काका का संबंध–लेखक और हरिहर काका में गहरे आत्मीय संबंध हैं। इसका कारण यह है कि काका लेखक के पड़ोसी हैं। वे लेखक को अपने बच्चे की तरह स्नेह करते आए हैं। बचपन में वे लेखक को अपने कंधे पर बैठाकर घुमाते थे। बड़े होने पर लेखक की पहली मित्रता हरिहर काका से ही हुई थी। हरिहर काका लेखक को अपने सुख-दुःख की सारी बातें बता देते थे।

हरिहर काका और उनका परिवार–हरिहर काका निःसंतान हैं। वे वृद्ध हैं और उनकी पत्नी का देहांत हो चुका है। वे पंद्रह बीघा ज़मीन के मालिक हैं। उनका संयुक्त परिवार है। उसमें हरिहर काका, उनके तीन भाई, भाइयों की पत्नियाँ, पुत्र एवं पुत्रवधुएँ हैं। हरिहर काका भाइयों के परिवार को अपना मानकर उनके साथ रहते हैं। उनकी ज़मीन से होने वाली आमदनी का उपयोग उनके भाइयों का परिवार ही करता है।

गाँव की ठाकुरबारी–हरिहर काका के गाँव में एक ठाकुरबारी है। इसकी स्थापना बहुत समय पहले एक साधु ने की थी। आज यह इलाके की प्रसिद्ध ठाकुरबारी है। इसके पास बीस बीघा ज़मीन, अच्छा भवन और खूब संपत्ति है। इसकी देखभाल के लिए एक समिति है। ठाकुरबारी का सबसे बड़ा अधिकारी एक महंत है। लोगों की ठाकुरबारी में बड़ी आस्था है। वे ठाकुरबारी में जाकर अपने कार्यों की सफलता के लिए ठाकुर जी को मनौती मनाते हैं और उसके पूरा होने पर जी खोलकर दान करते हैं। ठाकुरबारी में भजन-कीर्तन चलता रहता है और सुबह-शाम स्वादिष्ट प्रसाद भी वितरित होता है।

हरिहर काका का परिवार से मोहभंग–हरिहर काका के भाइयों ने काका की ज़मीन के लालच में अपनी पत्नियों से उनकी देखभाल अच्छी प्रकार से करने के लिए कहा हुआ था। लेकिन वे हरिहर काका का बिलकुल भी ध्यान नहीं रखती थीं। उन्हें रूखा-सूखा भोजन दिया जाता था। बीमार होने पर उन्हें अपनी दवा आदि भी स्वयं ही लेनी पड़ती थी। ऐसे समय में उन्हें अपनी स्वर्गवासी पत्नी का अभाव और संतानहीनता बहुत महसूस होती थी। लेकिन वे अपने भाइयों के परिवार के मोह में सबकुछ सहन करते रहे। एक दिन उनके भतीजे का कोई मित्र शहर से आया था। उसके लिए विशेष पकवान बनाए गए। काका को भी स्वादिष्ट भोजन मिलने की पूरी आशा थी, लेकिन उनके सामने फिर वही रूखा-सूखा भोजन आया। उसे देखकर वे क्रोधित हो गए। उन्होंने भोजन की थाली उठाकर फेंक दी और भाई की पत्नी को बुरा-भला कहते हुए बाहर चले गए। परिवार से उनका मोहभंग हो गया।

महंत द्वारा हरिहर काका को बातों में फँसाना–महंत को जब हरिहर काका के साथ घटित इस घटना का पता चला तो वह उन्हें ठाकुरबारी में ले गया और मोह-माया त्यागने का उपदेश दिया। उसने अपनी चिकनी-चुपड़ी बातों में फँसाकर उन्हें अपनी ज़मीन ठाकुरबारी के नाम करने के लिए प्रेरित किया, जिससे उनका नाम सदा के लिए अमर हो जाएगा।

महंत द्वारा हरिहर काका का अपहरण–हरिहर काका के तीनों भाई उन्हें मनाकर घर ले आए और उनकी अच्छी प्रकार सेवा करने लगे। परिवार वालों के इस बदले व्यवहार को देखकर हरिहर काका को सुखद आश्चर्य हुआ। एक दिन अचानक कुछ हथियार-बंद लोग उनके घर आए और उन्हें उठाकर ले गए। वे महंत के आदमी थे। उन्होंने काका को ठाकुरबारी के एक कमरे में ले जाकर बंद कर दिया और अनेक यातनाएँ दीं। उन्होंने ज़बरन कागज़ों पर उनका अँगूठा भी लगवा लिया। जब हरिहर काका के भाइयों को यह पता चला तो वे पुलिस को लेकर ठाकुरबारी पहुँचे और काका को मुक्त कराया।

काका के भाइयों का उनके साथ दुर्व्यवहार–हरिहर काका के भाई उन्हें मुक्त कराकर घर ले आए और उनकी सुरक्षा का विशेष प्रबंध कर दिया। वे काका पर ज़मीन अपने नाम लिख देने का दबाव भी बनाने लगे। काका ने अपने जीते-जी ज़मीन किसी के भी नाम लिखने से मना कर दिया। एक दिन भाइयों ने भी उनके साथ वही किया, जो महंत ने किया था। उन्होंने काका के साथ मारपीट की और ज़बरदस्ती कागज़ों पर अँगूठा लगवा लिया। जब काका ने शोर मचाया तो आस-पास के लोग इकट्ठे हो गए। पुलिस भी आ गई और काका को भाइयों के चंगुल से छुड़वाया। परिवारजनों के इस व्यवहार से हरिहर काका बहुत दुःखी हुए।

हरिहर काका की वर्तमान स्थिति–इस घटना के बाद से काका अकेले रहते हैं। बनाने-खाने के लिए उन्होंने एक नौकर रख लिया है। उन्हें सुरक्षा के लिए चार पुलिस वाले मिले हैं। वे काका के खर्चे पर मौज-मस्ती करते हैं। काका अब बिलकुल चुप रहने लगे हैं, वे किसी से कोई बात नहीं करते हैं। यहाँ तक कि उन्होंने लेखक को भी अपने मन की कोई बात नहीं बताई। लेखक उनकी इस स्थिति को देखकर बहुत चिंतित हैं।

पाठ के प्रमुख पात्र और उनका परिचय

1. **हरिहर काका**– • मुख्य पात्र • निःसंतान एवं वृद्ध • पंद्रह बीघा ज़मीन का मालिक • परिवार से उपेक्षित • परिजनों द्वारा पीड़ित • महंत के शोषण का शिकार।
2. **महंत**– • ठाकुर बारी का महंत • धर्म का ठेकेदार • स्वार्थी, धनलोलुप एवं अवसरवादी • धूर्त एवं कपटी • दबंग एवं हरिहर काका का अपहरणकर्ता।
3. **नेताजी**– • राजनीति का माहिर • अवसरवादी एवं चापलूस • बहती गंगा में हाथ धोने वाला।
4. **हरिहर काका के भाई**– • स्वार्थी एवं लालची • मातृभाव से रहित • पारिवारिक रिश्तों का खून करने वाले • भावना शून्य।
5. **ग्रामवासी**– • अफ़वाहों को हवा देने वाले • अन्याय के मूक दर्शक • अत्याचार का विरोध न करने वाले • बातूनी।

शब्दार्थ

तबीयत = मन की स्थिति। **यंत्रणा** = यातना/क्लेश/कष्ट। **मनःस्थिति** = मन की स्थिति। **चंद** = कुछ। **आसक्ति** = लगाव। **व्यावहारिक** = व्यवहार संबंधी/वास्तविक। **वैचारिक** = विचार संबंधी। **सयाना** = वयस्क/बुद्धिमान, समझदार। **फ़िलहाल** = अभी/इस समय। **मझधार** = बीच में (जल प्रवाह या भवसागर के मध्य में)। **विकल्प** = दूसरा उपाय। **ठाकुरबारी**

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

= देवस्थान। **प्रचलित** = जो चलन में है। **जाग्रत** = जगाना। **कलेवर** = शरीर/देह/ऊपरी ढाँचा। **मनौती** = मन्नत। **समिति** = संस्था। **संचालन** = नियंत्रण/चलाना। **विमुख** = प्रतिकूल। **चपेट** = आघात/प्रहार। **अहाता** = चारों ओर से दीवारों से घिरा हुआ मैदान। **दवनी** = गेहूँ/धान निकालने की प्रक्रिया। **अगउम** = प्रयोग में लाने से पहले देवता के लिए निकाला गया अंश। **घनिष्ठ** = अत्यधिक निकटता। **प्रवचन** = वेद, पुराण आदि का उपदेश करना। **सार्थक** = उद्देश्य वाला। **परिस्थितिवश** = परिस्थितियों के कारण। **फूटी आँख न सुहाना** = थोड़ा भी अच्छा न लगना। **दोनों जून** = दोनों वक्त। **अलावा** = अतिरिक्त। **प्रतीक्षारत** = इंतज़ार करना। **इत्मीनान** = तसल्ली। **मशगूल** = व्यस्त। **धमाचौकड़ी** = उछलकूद। **दालान** = बरामदा। **मोहभंग** = प्रेम की भ्रांति का नाश। **विस्फोट** = फूट कर बाहर निकलना। **उपलक्ष्य** = संकेत। **विराजमान** = उपस्थित। **कान खड़े होना** = सावधान होना। **तत्क्षण** = उसी समय। **स्वार्थ** = अपना मतलब। **बैकुंठ** = स्वर्ग। **कीर्ति** = प्रसिद्धि/ख्याति। **पाँव पखारना** = पाँव धोना। **अकारथ** = बेकार। **प्रतिक्रिया** = प्रतिकार/बदला/क्रिया के विरोध में होने वाली घटना। **परिवर्तित** = बदला हुआ। **इंतज़ाम** = प्रबंध। **भावी आशंका** = भविष्य की चिंता। **मथना** = बार-बार सोचना। **पसीज़ना** = मन में दया का भाव जागना। **याचना** = माँगना। **आवभगत** = सत्कार। **मुस्तैद** = कमर कस कर तैयार रहना। **तथ्य** = वास्तविक घटना। **वाकिफ़** = परिचित। **अवगत** = जाना हुआ। **अचल** = गतिहीन। **परोक्ष** = जो सामने दिखाई न दे। **हिमायती** = तरफदारी करने वाला/पक्षपाती। **टोह** = खोज। **वय** = वसीयत। **विकल्प** = उपाय। **राजी** = सहमत। **दबंग** = प्रभावशाली। **परिणत** = जिसमें परिवर्तन हुआ हो। **गोपनीयता** = गुप्त रखना/छिपाना। **निर्वाह** = निभाना/आज्ञानुसार कार्य करना। **भनक** = उड़ती खबर। **चंपत** = गायब हो जाना। **शुभचिंतक** = भलाई चाहने वाला। **आहट** = किसी के आने-जाने, बात करने की मंद आवाज़। **दल-बल** = संगी-साथी। **सन्नाटा** = चुप्पी/मौन। **व्याप्त** = पूरी तरह फैला और समाया हुआ। **हरजाने** = हानि के बदले दिया जाने वाला धन। **प्रस्थान** = जाना। **तितर-बितर** = अस्त-व्यस्त। **घृणित** = घिनौना। **दुराचारी** = दुष्ट/बुरा आचरण करने वाला। **नेक** = भला। **बेचैन** = व्याकुल। **उबारना** = पार करना/निकालना। **एकमात्र** = केवल एक। **दस्तक** = दरवाज़ा खटखटाना। **सीमित** = सीमा के अंदर। **असमर्थ** = योग्यता न होना। **रंगे हाथों पकड़ना** = जुर्म करते हुए पकड़े जाना। **रोड़ा** = छोटा पत्थर। **आत्मसमर्पण** = हथियार डाल देना। **बयान** = कथन/वक्तव्य। **घृणा** = घिन। **सँजोना** = सँभालकर रखना। **सूरमा** = योद्धा/बहादुर। **खूँखार** = अत्यधिक क्रूर/निर्दयी। **अपेक्षा** = तुलना। **जायदादहीन** = धन-दौलत के बिना। **चिकनी-चुपड़ी बातें** = खुशामद भरी या ललचाने वाली बातें। **वाने** = वेश में। **कुकर्मी** = बुरे काम करने वाले। **छल, बल, कल** = युक्ति/बुद्धि। **अर्जित** = इकट्ठा। **घृणित** = बुरा। **माध्यम** = सहारा। **दूध की मक्खी** = तुच्छ समझना/बेकार समझना। **गिद्ध-दृष्टि** = तेज़ नज़र। **स्वतः** = अपने आप। **अखरने** = बुरा लगना। **दुर्गति** = बुरी हालत। **पखारना** = धोना। **तनिक** = थोड़े भी। **प्रतिकार** = विरोध। **चेत आना** = ध्यान आना। **तत्काल** = उसी समय। **तत्परता** = दक्षता। **फुरती** = तेज़ी। **बदतर** = अत्यधिक बुरा। **बरामद** = हासिल करना। **फ़रार** = भाग जाना। **पुनः** = फिर से। **धर दबोचना** = पकड़ लेना। **नेपथ्य** = रंग-मंच के पीछे की जगह। **पैरवी** = खुशामद/अनुगमन। **वास्तविक** = असली। **सतर्क** = सावधान। **सद्भाव** = अच्छा व्यवहार। **प्रयत्नशील** = प्रयास में लगे रहना। **विशिष्ट** = ख़ास। **प्रस्ताव** = योजना। **विचारणीय** = विचार करने योग्य। **चर्चनीय** = चर्चा के योग्य। **अफ़सोस** = दुख। **हस्तगत** = हाथों में गया हुआ। **रहस्यात्मक** = राज़ से भरी हुई। **भयावनी** = डरावनी। **आच्छादित** = ढका हुआ।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

प्रश्न 1 : **उनकी इस स्थिति में मुझे चिंतित कर दिया है। जैसे कोई नाव बीच मझधार में फँसी हो और उस पर सवार लोग चिल्ला कर भी अपनी रक्षा न कर सकते हों क्योंकि उनकी चिल्लाहट दूर तक फैले सागर के बीच उठती गिरती लहरों में विलीन हो जाने की अतिरिक्त कर ही क्या सकती है। लेखक के इस कथन की संदर्भ सहित विवेचना कीजिए।** ***(CBSE SQP 2023-24)***

उत्तर : लेखक हरिहर काका की जिंदगी से गहरे से जुड़े थे। दोनों में गहरे आत्मीय संबंध थे। काका के साथ घटी घटना के बाद लेखक हरिहर काका से मिलने गया और उनकी तबीयत के विषय में पूछा। हरिहर काका ने सिर उठाकर एक बार लेखक की ओर देखा और फिर सिर झुका लिया उनकी सयंत्रणा और मनोदशा के बारे में आँखों ने बहुत कुछ कह दिया, पर काका कुछ न बोल सके। उनकी स्थिति मझधार में फँसी नाव जैसी थी, जिस पर सवार लोग चिल्लाकर भी अपनी रक्षा न कर सकते हों अर्थात् गाँव में इतने लोग होते हुए भी वे अकेले और असहाय थे। मौन रहने के अलावा उनके सामने दूसरा विकल्प न था। उनकी निराशा, विवशता और खामोशी ने लेखक को चिंतित कर दिया।

प्रश्न 2 : **यदि आपके आस-पास हरिहर काका जैसी हालत में कोई हो तो आप उसकी किस प्रकार मदद करेंगे?**

उत्तर : हरिहर काका एक वृद्ध व्यक्ति थे। वे संतानहीन थे। उनके अपनों ने उनके साथ बहुत बुरा व्यवहार किया था। इस समय वे अकेले रह रहे थे। उन जैसी हालत का कोई व्यक्ति यदि हमारे आस-पास हो तो हम उसकी निम्नलिखित मदद करेंगे–

(i) हम प्रतिदिन उसका हाल-चाल पूछने जाएँगे।

(ii) थोड़ी देर उसके पास बैठकर बातें करेंगे, ताकि उसका अकेलापन दूर हो जाए।

(iii) यदि वह बीमार होगा तो उसकी दवा आदि का प्रबंध करेंगे तथा अपने बड़ों की तरह उसकी सेवा करेंगे।

(iv) सरकार ने वृद्ध लोगों की सहायता के लिए जो योजनाएँ चलाई हैं, उनका लाभ उसे दिलवाएँगे।

(v) अपने घर में होने वाले उत्सवों में उसे शामिल करेंगे, ताकि उसे भी हमारे साथ अपनेपन का एहसास हो सके।

(vi) उसे प्रताड़ित करने वाले लोगों के विरुद्ध उचित कानूनी कार्रवाई कराकर उन्हें दंडित कराएँगे, जिससे कोई अन्य व्यक्ति उसे पुनः प्रताड़ित करने की कोशिश न करे।

प्रश्न 3 : **हरिहर काका के गाँव में यदि मीडिया की पहुँच होती तो उनकी क्या स्थिति होती? अपने शब्दों में लिखिए।**

उत्तर : मीडिया का काम समाज तथा देश-दुनिया में घट रही घटनाओं की जानकारी जन-जन तक पहुँचाना है। इसका काम लोगों में जागृति उत्पन्न करना भी है। यदि मीडिया हरिहर काका के गाँव में पहुँच जाता तो उनकी स्थिति इतनी बदतर न होती; क्योंकि मीडिया उनके साथ घटित घटना को टी०वी० आदि पर प्रसारित करता। इसे देखकर अनेक लोग उनकी सहायता के लिए आगे आते। वृद्धों की सहायता करने वाली संस्थाएँ उनकी मदद करतीं। जब यह घटना मीडिया के द्वारा सरकारी अधिकारियों के संज्ञान में आती तो हरिहर काका की सुरक्षा का उचित प्रबंध होता, उन पर अत्याचार

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

करने वाले महंत और उनके भाइयों को सज़ा मिलती तथा हरिहर काका को न्याय मिलता। इस प्रकार हरिहर काका की स्थिति इतनी खराब न होती, जितनी पाठ में दिखाई गई है।

प्रश्न 4 : ''हरिहर काका कहानी पारिवारिक जीवन में घर कर चुकी स्वार्थपरता और हिंसा-प्रवृत्ति को बेनकाब करती है।'' तर्कसंगत उत्तर दीजिए। ***(CBSE 2023)***

उत्तर : समाज में पारिवारिक रिश्तों की बड़ी अहमियत है। इन रिश्तों के कारण मनुष्य जीवन में बड़े-से-बड़े दुःख को सहन कर जाता है। हरिहर काका अपने तीन भाइयों के साथ रहते थे। भाई पंद्रह बीघा ज़मीन के लालच में उनकी देखभाल कर रहे थे। महंत के चंगुल से काका को छुड़ाने के बाद भाईयों ने उनपर ज़मीन नाम करने का दबाव बनाना शुरू कर दिया। जब हरिहर काका ने जीते-जी ज़मीन नाम करने से मना कर दिया तो भाइयों ने काका के साथ मार-पीट की और उन्हें मारने का भी प्रयास किया। इस प्रकार 'हरिहर काका' कहानी पारिवारिक जीवन में घर कर चुकी स्वार्थपरता और हिंसा-प्रवृत्ति को बेनकाब करती है।

प्रश्न 5 : कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि लेखक ने यह क्यों कहा, ''अज्ञान की स्थिति में ही मनुष्य मृत्यु से डरते हैं। ज्ञान होने के बाद तो आदमी आवश्यकता पड़ने पर मृत्यु को वरण करने के लिए तैयार हो जाता है।''

उत्तर : मृत्यु के सत्य को न समझना अज्ञान की स्थिति है। मृत्यु का सत्य यह है कि प्रत्येक जीवधारी की मृत्यु निश्चित है। जो इस सच्चाई को नहीं समझता, वही मृत्यु से डरता है, लेकिन जो इस बात को जान लेता है, वह आवश्यकता पड़ने पर मृत्यु को स्वयं गले लगा लेता है। हरिहर काका समझ चुके हैं कि जीते-जी अपनी ज़मीन दूसरों के नाम लिख देना भी उनके लिए मृत्यु के समान है। इसलिए जब उनके भाई उन्हें मारने की धमकी देते हैं तो वे कहते हैं "मैं अकेला हूँ····· तुम सब इतने हो! ठीक है, मुझे मार दो····· मैं मर जाऊँगा, लेकिन जीते-जी एक धूर ज़मीन भी तुम्हें नहीं लिखूँगा·····।"

प्रश्न 6 : ठाकुरबारी के प्रति गाँव वालों के मन में अपार श्रद्धा के जो भाव हैं, उससे उनकी किस मनोवृत्ति का पता चलता है? ***(CBSE 2016)***

उत्तर : ठाकुरबारी के प्रति गाँव वालों के मन में अपार श्रद्धा के भाव हैं। वे अपना प्रत्येक कार्य ठाकुर जी का आशीर्वाद लेकर ही प्रारंभ करते हैं। अपने कार्यों की सफलता को वे ठाकुर जी की कृपा मानते हैं। इससे पता चलता है कि उनके मन में ईश्वर के प्रति गहरी आस्था है। वे प्रत्येक कार्य के लिए ठाकुरबारी में जाकर मनौती मनाते हैं। इससे पता चलता है कि वे अंधविश्वासी भी हैं, इसी अंधविश्वास के कारण वे ठाकुरबारी के महंत को भी भगवान की तरह मानते हैं।

प्रश्न 7 : 'हरिहर काका' कहानी के आधार पर लिखिए कि कहानी के अंत में हरिहर काका की सुरक्षा में राइफलधारी पुलिस के चार जवान क्यों नियुक्त किए गए। हरिहर काका की वास्तविक सुरक्षा किसके द्वारा और कैसे की जा रही थी? ***(CBSE 2023)***

उत्तर : हरिहर काका के भाइयों ने जब उनपर जानलेवा हमला किया तो उसके बाद काका भाइयों के परिवार से एकदम अलग रहने लगे। तब उनकी सुरक्षा में पुलिस के चार राइफलधारी जवान नियुक्त कर दिए गए। काका पुलिस की सुरक्षा में अवश्य रह रहे थे, लेकिन उन्हें वास्तविक सुरक्षा ठाकुरबारी और अपने भाइयों से मिल रही थी। ठाकुरबारी के साधु-संत और काका के भाई इस बात के प्रति पूरी तरह सतर्क थे कि उनमें से कोई या गाँव का कोई अन्य हरिहर काका के साथ ज़ोर-जबरदस्ती न कर पाए। साथ ही अपना सद्भाव और मधुर व्यवहार प्रकट कर पुनः उनका ध्यान अपनी ओर खींच लेने के लिए दोनों दल प्रयत्नशील थे।

प्रश्न 8 : हरिहर काका के मामले में गाँव वालों की क्या राय थी और उसके क्या कारण थे?

उत्तर : हरिहर काका के मामले में पूरा गाँव दो खेमों में बँट गया था। कुछ लोगों की राय थी कि हरिहर काका को अपनी ज़मीन ठाकुरबारी के नाम लिख देनी चाहिए। ये वे लोग थे, जो ठाकुरबारी से जुड़े थे। सुबह-शाम वहाँ जाकर प्रसाद के बहाने स्वादिष्ट भोजन करते थे। वे महंत और वहाँ के साधु-संतों को खुश करने के लिए ऐसा चाहते थे। दूसरे गाँव के कुछ पढ़े-लिखे और प्रगतिशील विचारधारा वाले लोग थे। वे किसान के लिए उसकी ज़मीन का महत्त्व समझते थे। वे लोग नहीं चाहते थे कि हरिहर काका जीते-जी किसी को भी अपनी ज़मीन दें। उनकी राय थी कि हरिहर काका के बाद ही उनकी ज़मीन उनके भाइयों को मिलनी चाहिए।

प्रश्न 9 : कथावाचक और हरिहर काका के बीच क्या संबंध है और इसके क्या कारण हैं?

उत्तर : कथावाचक और हरिहर काका के बीच बड़ा भावनात्मक संबंध है। इस प्रेम और लगाव के वैसे तो अनेक व्यावहारिक और वैचारिक कारण हैं, लेकिन मुख्य कारण दो ही हैं। पहला तो यह कि हरिहर काका लेखक के पड़ोस में रहते हैं। दूसरा कारण यह है कि हरिहर काका की अपनी कोई संतान नहीं है। वे लेखक को बचपन से अपने पुत्र की तरह प्यार करते रहे हैं। उन्होंने उसे अपने कंधों पर बिठाकर खिलाया है। बड़ा होने पर लेखक की पहली दोस्ती हरिहर काका के साथ ही हुई। वे लेखक से अपनी कोई बात नहीं छिपाते। उसके साथ खुलकर अपने सुख-दुख की सभी बातें कर लेते हैं। इस प्रकार दोनों एक-दूसरे के बड़े नज़दीक हैं।

प्रश्न 10 : हरिहर काका को महंत ने एकांत कमरे में बैठाकर प्रेम से क्या समझाया?

उत्तर : परिवार वालों पर क्रोधित हरिहर काका को मंहत जी ने यह समझाया कि यहाँ कोई भी किसी का नहीं है। सब माया का बंधन है। पत्नी, बेटे, भाई-बंधु सब स्वार्थी हैं। तुम्हारे हिस्से में पंद्रह बीघे खेत हैं, इसलिए वे तुम्हें रखे हुए हैं। यदि तुम उन्हें ये खेत न देकर किसी दूसरे को दे दोगे तो ये खून के संबंध समाप्त हो जाएँगे। तुम ये खेत ठाकुर के नाम लिख दोगे तो तुम्हें बैकुंठ मिलेगा। तीनों लोकों में तुम्हारी कीर्ति जगमगा उठेगी। जब तक सूरज-चाँद रहेंगे, तुम्हारा नाम रहेगा। सभी तुम्हारा यशोगान करेंगे और तुम्हारा जीवन सार्थक हो जाएगा।

प्रश्न 11 : कहानी में हरिहर काका और उसके परिवार के बारे में क्या बताया गया है? विस्तार से लिखिए।

उत्तर : 'हरिहर काका' पाठ में बताया गया है कि हरिहर काका लेखक के पड़ोसी हैं। लेखक उन्हें बचपन से जानता है। वे लेखक को बहुत प्यार करते हैं। उन्होंने बचपन में लेखक को अपने कंधे पर बैठाकर घुमाया है। काका के परिवार में उनके तीन भाई, तीनों भाइयों की पत्नियाँ और उनके बच्चे हैं। काका की अपनी कोई संतान नहीं है। उन्होंने दो विवाह किए, लेकिन उनकी कोई संतान नहीं हुई। अब वे विधुर हैं और अपने भाइयों के साथ रहते हैं। भाइयों की पत्नियाँ रूखा-सूखा भोजन देती हैं। उनका परिवार उनके हिस्से की ज़मीन हड़पना चाहता है। इस प्रकार हरिहर काका अपने परिवार में सुखी नहीं हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रश्न 12 : कल्पना कीजिए कि आप किसी पत्र के संवाददाता हैं। हरिहर काका प्रकरण की रिपोर्ट आप कैसे लिख भेजते? एक अनुच्छेद लिखिए।

उत्तर : बड़ागाँव, उत्तर प्रदेश।

यहाँ गाँव में वृद्ध हरिहर काका की ज़मीन को हड़पने के लिए विगत कुछ दिनों से ठाकुरबारी के महंत और काका के भाइयों के बीच खींचतान चल रही थी। एक दिन महंत ने हरिहर काका को समझाया कि वह अपनी ज़मीन ठाकुरबारी के नाम कर दे, इससे उसे अक्षय पुण्य मिलेगा। जब काका महंत की बात से सहमत नहीं हुए तो उसने उनका अपहरण करा दिया और उन्हें ठाकुरबारी के एक कमरे में बंद कर दिया। उन्हें तरह-तरह की यातनाएँ दी गईं। हरिहर काका के भाइयों ने पुलिस की सहायता से उन्हें मुक्त कराया। इसके बाद काका अपने भाइयों के पास रहने लगे, लेकिन भाइयों ने भी उन पर ज़मीन नाम कर देने का दबाव डाला। जब काका ने उन्हें ऐसा करने से मना कर दिया तो भाइयों ने भी उनके साथ वही व्यवहार किया, जो महंत ने किया था। काका ने बड़ी मुश्किल से अपनी जान बचाई। अब हरिहर काका अपने परिवार से अलग अकेले रह रहे हैं। उनकी सुरक्षा के लिए पुलिस के दो सिपाही तैनात कर दिए गए हैं।

समाज में वृद्धों की ऐसी दुर्दशा चिंता का विषय है। सामाजिक संस्थाओं को इस प्रवृत्ति को रोकने के लिए अधिक-से-अधिक प्रयास करना चाहिए।

प्रश्न 13 : हरिहर काका को महंत और अपने भाई एक ही श्रेणी के क्यों लगने लगे?

उत्तर : महंत ने हरिहर काका की ज़मीन के लालच में उनका अपहरण करवा लिया था। उन्हें एक कमरे में बंद कर दिया था और तरह-तरह की यातनाएँ दी थीं। उसने ज़बरन कागज़ों पर उनका अँगूठा भी लगवा लिया था। हरिहर काका के भाइयों ने भी उन पर ज़मीन नाम कर देने का दबाव बनाया था और जब उन्होंने ज़मीन देने से मना कर दिया तो तीनों भाइयों ने उनके साथ मारपीट की और उनके हाथ-पैर बाँधकर एक कमरे में बंद कर दिया। इसी व्यवहार के कारण हरिहर काका को महंत और अपने भाई एक ही श्रेणी के लगने लगे।

प्रश्न 14 : हरिहर काका को किन यातनाओं का सामना करना पड़ रहा था?

उत्तर : हरिहर काका को जीवन में अनेक यातनाओं का सामना करना पड़ा। सबसे पहले उन्हें अपने भाइयों की पत्नियों से अपमान की पीड़ा झेलनी पड़ी। वे काका को बचा हुआ रूखा-सूखा भोजन देती थीं और उनसे अभद्र व्यवहार करती थीं। इसके बाद ठाकुरबारी के महंत ने उनकी पंद्रह बीघा ज़मीन बलपूर्वक हड़पने के लिए उनका अपहरण करवा लिया और एक कमरे में बंद करके उनके मुँह में कपड़ा ठूँस दिया गया। उन्हें तरह-तरह की यातनाएँ दी गईं। उनके भाइयों ने उन पर ज़मीन नाम कर देने का दबाव बनाया। जब उन्होंने अपनी ज़मीन देने से मना कर दिया तो भाइयों ने उन्हें रस्सियों से बाँध दिया और उनके साथ मारपीट की। इसके बाद हरिहर काका ने एकाकीपन की यातना को भी सहन किया। इस प्रकार उन्होंने जीवन में एक के बाद एक अनेक यातनाओं को सहन किया।

प्रश्न 15 : समाज में रिश्तों की क्या अहमियत रह गई है? 'हरिहर काका' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए। आप परिवार में किस प्रकार के रिश्तों को उपयुक्त मानते हैं और क्यों?

अथवा **समाज में रिश्तों की क्या अहमियत है? इस विषय पर अपने विचार प्रकट कीजिए।**

उत्तर : रिश्ते मनुष्य के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण हैं, लेकिन आज रिश्तों की अहमियत समाप्त होती जा रही है। पहले धन की अपेक्षा रिश्तों को महत्त्व दिया जाता था, लेकिन आज रिश्तों का आधार केवल स्वार्थ रह गया है। चाहे कितना भी घनिष्ठ संबंध हो, स्वार्थपूर्ण होते ही वह टूट जाता है।

मैं परिवार में ऐसे रिश्तों को उपयुक्त मानता हूँ, जो सुख-दुःख में एक-दूसरे के काम आएँ। पारिवारिक रिश्तों में स्वार्थ के लिए कोई स्थान नहीं होना चाहिए। मैं ऐसा इसलिए मानता हूँ; क्योंकि रिश्तों के बिना हमारा जीवन नहीं कट सकता।

प्रश्न 16 : 'हरिहर काका' कहानी के आधार पर हरिहर काका की असहाय स्थिति का संक्षिप्त वर्णन कीजिए। उस स्थिति के लिए उत्तरदायी घटनाओं से आपको जीवन में सावधान रहने की क्या सीख मिलती है?

उत्तर : हरिहर काका को एक ओर तो महंत की यातनाओं का सामना करना पड़ रहा था तो दूसरी ओर उन्हें अपने भाइयों और उनके परिवारजनों द्वारा दी जा रही यातनाओं को मज़बूरन सहना पड़ रहा था। हरिहर काका की ज़मीन-जायदाद उनकी जान की दुश्मन बनी हुई थी। महंत ने उनकी ज़मीन हड़पने के लिए उनका अपहरण तक करवा लिया था। महंत ने उन्हें शारीरिक एवं मानसिक यातनाएँ दी थीं। बाद में उनके अपने ही भाइयों ने उनके साथ मारपीट की। महंत तो पराया था, मगर उन्हें अपने सगे भाइयों से यह उम्मीद नहीं थी। अपने भाइयों द्वारा बेइज़्ज़त होकर तो उनका ऐसा मोहभंग हुआ कि वे गूँगे के समान हो गए। साथ ही गाँव वालों की तरह-तरह की बातों ने उनको अंदर तक हिलाकर रख दिया।

इस स्थिति के लिए उत्तरदायी घटनाओं से हमें जीवन में उन सभी लोगों से सावधान रहने की सीख मिलती है, जो हमारे जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं परंतु वह हमसे नहीं बल्कि हमारी धन-दौलत को हासिल करने के लिए हमसे प्रेम का दिखावा करते हैं और छल से हमें लूटना चाहते हैं।

प्रश्न 17 : पंद्रह बीघे ज़मीन के लालच ने किस तरह लोगों के आपसी सद्भाव को बिगाड़ दिया था? 'हरिहर काका' पाठ के आधार पर संक्षेप में लिखिए। यह घटना आपके मन पर क्या प्रभाव डालती है?

उत्तर : धन-दौलत के लालच में लोग महत्त्वपूर्ण संबंधों को नष्ट कर डालते हैं तथा आपसी सद्भाव को बिगाड़ लेते हैं। यह बात 'हरिहर काका' कहानी में बहुत अच्छी प्रकार बताई गई है। हरिहर काका के पास पंद्रह बीघा ज़मीन थी। उनके भाई उस ज़मीन पर नज़र गड़ाए हुए थे और उसे हड़पना चाहते थे।

ठाकुरबारी के महंत की लालची नज़रें भी हरिहर काका की ज़मीन पर टिकी हुई थीं। महंत चाहता था कि हरिहर काका अपनी मौत से पहले अपनी ज़मीन अपने भाइयों के नाम न कर ठाकुरबारी के नाम कर दें। हरिहर काका के भाई भी जानते थे कि अगर हरिहर काका ने ज़मीन ठाकुरबारी के नाम कर दी तो वे कहीं के नहीं रहेंगे। पंद्रह बीघे उपजाऊ ज़मीन दो लाख से अधिक की संपत्ति थी। हरिहर

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

काका की यह ज़मीन उनकी जान की दुश्मन बनी हुई थी। ज़मीन के लालच में पहले तो ठाकुरबारी के महंत ने उनके साथ बहुत ही अच्छा व्यवहार किया तथा उनको ठाकुरबारी में आकर रहने को कहा, परंतु जब हरिहर काका अपने भाइयों के निवेदन पर वापस अपने घर आ गए तो महंत ने अपने लोगों के साथ उनके घर जाकर उनका अपहरण कर लिया तथा ठाकुरबारी में ज़ोर-ज़बरदस्ती से ज़मीन ठाकुरबारी के नाम कराने की कोशिश की। उनके अपने ही भाइयों ने भी ज़मीन के लालच में उनके साथ मारपीट की। महंत तो पराया था, मगर उन्हें अपने सगे भाइयों से यह उम्मीद नहीं थी। यह घटना हमारे मन में बहुत ही बुरा प्रभाव डालती है कि किस प्रकार ज़मीन-जायदाद के लालच में लोग अपने आपसी सद्भाव को भूलकर एक-दूसरे के बैरी बन जाते हैं।

प्रश्न 18 : पुजारी द्वारा हरिहर काका के घर की बातें सुनकर ठाकुरबारी के महंत के कान खड़े हो जाने को आप उसकी किस प्रवृत्ति का द्योतक मानते हैं? ऐसी स्थिति में उनका क्या कर्तव्य होना चाहिए था? *(CBSE 2016)*

उत्तर : हरिहर काका के घर की बातें सुनकर महंत के कान खड़े होना उसकी इस प्रवृत्ति का द्योतक है कि वह बहुत स्वार्थी, अवसरवादी और धूर्त है। हरिहर काका के परिवार में हुई घटना के बाद वह उन्हें ठाकुरबारी में ले जाता है और चिकनी-चुपड़ी बातों में फँसाकर उनके भाइयों के विरुद्ध भड़काता है। वह उन्हें अपनी ज़मीन ठाकुरबारी के नाम कर देने के लिए कहता है। वह एक महंत था। हमारे विचार से उसका कर्तव्य भटके हुए लोगों को सही राह दिखाना और समाज को संगठित करना था। वह हरिहर काका के भाइयों को बुलाकर समझाता और उन्हें अपने भाई की देखभाल करने के लिए प्रेरित करता। उसकी बात सब लोग अवश्य ही मान जाते।

प्रश्न 19 : ठाकुरबारी जैसी संस्थाओं की ग्रामीण समाज के प्रति भूमिका और कर्तव्यों पर प्रकाश डालिए। *(CBSE 2015)*

उत्तर : ठाकुरबारी जैसी संस्थाओं को ग्रामीण समाज के प्रति एक महत्त्वपूर्ण दायित्व का निर्वहन करना चाहिए। किसी भी सामाजिक अथवा धार्मिक संस्था का यह दायित्व है कि वह समाज में व्याप्त स्वार्थ की भावना को दूरकर जन-जन में परोपकार का भाव जगाए। समाज में व्याप्त अनाचार, अराजकता, अन्याय, अंधविश्वास और पापाचार को दूरकर जन-जन में संतोष एवं धैर्य के भाव जाग्रत करे। 'हरिहर काका' कहानी में भी गाँव के लोगों की ठाकुरबारी पर गहरी आस्था थी। उनके सभी शुभ कार्यों का आरंभ यदि ठाकुरबारी से होता था तो वहीं दुःखी मन को आश्रय देने का स्थान भी उन्हें ठाकुरबारी ही दिखाई देता था, परंतु आस्था और विश्वास के इस मंदिर ने हरिहर काका जैसे लोगों के साथ विश्वासघात और दुर्व्यवहार करके ये दिखा दिया कि बदलते परिवेश के साथ-साथ धार्मिक संस्थाएँ भी भ्रष्टाचार और अपराध के अड्डे बन गई हैं। ऐसे में ठाकुरबारी के महंत एवं तथाकथित साधु समाज के प्रति जन-मानस में घृणा का भाव ही पैदा होता है; क्योंकि समाज उनसे अच्छे और आदर्श आचरण की अपेक्षा करता है। लोभ-लालच और षड्यंत्रों में फँसे साधु-संतों के इस आचरण से युवा पीढ़ी पर बुरा प्रभाव पड़ता है। धार्मिक संस्थाओं और समाज की उच्च आदर्शवादिता से उनका विश्वास उठने लगता है, जो किसी भी समाज के लिए हितकारी नहीं है।

प्रश्न 20 : महंत द्वारा हरिहर काका का अपहरण महंत के चरित्र की किस सच्चाई को सामने लाता है तथा आपके मन में इससे ठाकुरबारी जैसी संस्थाओं के प्रति कैसी धारणा बनती है? बताइए। *(CBSE 2015)*

अथवा **महंत द्वारा हरिहर काका का अपहरण महंत के चरित्र की किस सच्चाई को सामने लाता है? ठाकुरबाड़ी जैसी संस्थाओं से कैसे बचा जा सकता है?** *(CBSE 2020)*

उत्तर : महंत द्वारा हरिहर काका का अपहरण उसके चरित्र की 'मुँह में राम बगल में छुरी' वाली विशेषता को प्रकट करता है। लोग उसे भगवान की तरह पूजते हैं, लेकिन वह लालची, अवसरवादी, स्वार्थी और कपटी है। वह भेड़ की खाल में छिपा हुआ भेड़िया है। इससे हमारे मन में ठाकुरबारी जैसी संस्थाओं के बारे में यह धारणा बनती है कि ये संस्थाएँ भ्रष्टाचार, लूट-खसौट, अपहरण, हत्या और व्यभिचार के अड्डे बन गए हैं। वहाँ आस्था और विश्वास के नाम पर लोगों को ठगा जाता है। वहाँ जाकर लोगों को सुख-शांति नहीं प्राप्त होती। लोभ, लालच, षड्यंत्रों और भोग-विलास में फँसे साधु-संतों के आचरण का युवा पीढ़ी पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। धार्मिक संस्थाओं से उनकी आस्था समाप्त हो रही है। यह समाज के लिए हितकारी नहीं है।

प्रश्न 21 : हरिहर काका ने ठाकुरबारी जैसी संस्था में ही रहना प्रारंभ कर दिया था, जबकि उनका प्रिय स्थान तो उनका घर था। उन्होंने ऐसा क्यों किया? उनके परिवार के लोगों के प्रति अपने विचार व्यक्त करके बताइए कि यदि आप उनमें से एक होते तो क्या करते? *(CBSE 2015, 16)*

उत्तर : हरिहर काका की स्वयं की कोई संतान नहीं थी और उनकी पत्नी की भी मृत्यु हो गई थी। ऐसी परिस्थिति में उन्होंने अपने भाइयों के परिवार को ही अपना परिवार समझ लिया था और उनके साथ रहने लगे थे। शुरू-शुरू में तो हरिहर काका का जीवन शांतिपूर्वक चलता रहा, किंतु कुछ सालों के पश्चात् उनके परिवार के सदस्य उनसे दूरी बनाने लगे। उनके मान-सम्मान में कमी आने लगी। घर का बचा हुआ भोजन ही उन्हें दिया जाता था। एक बार घर में स्वादिष्ट पकवान बने, किंतु हरिहर काका को सूखा भोजन दिया गया। इस घटना से वे इतने दुखी हुए कि उन्होंने भोजन की थाली पटक दी और घर छोड़कर चले गए। उनका परिवार से मोहभंग हो गया, इसलिए उन्हें अपने प्रिय स्थान (घर) को छोड़कर ठाकुरबारी जैसी संस्था में रहना पड़ा। उनके परिवार के लोगों का व्यवहार स्वार्थ से भरा था। वे केवल उनकी पंद्रह बीघे ज़मीन को प्राप्त करना चाहते थे। यदि मैं उनमें से एक होता तो समय निकालकर उनके पास बैठता, उनके सुख-दुःख की बातें सुनता, ताकि उन्हें अकेलेपन से मुक्ति मिल पाए। मैं उन्हें परिवार में अपनेपन का अहसास दिलाता। स्वयं उनके साथ बैठकर भोजन करता, जिससे उन्हें इस बात का अनुभव होता कि घर के लोग उनके साथ खाने-पीने में कोई भेदभाव नहीं करते हैं। वे जो खुद खाते हैं, वही मुझे खिलाते हैं।

प्रश्न 22 : लेखक ने हरिहर काका के साथ अपने गहरे लगाव के क्या कारण बताए हैं? आप इनके अतिरिक्त इस लगाव के और क्या कारण मानते हैं? लिखिए।

उत्तर : लेखक ने हरिहर काका से अपने गहरे लगाव के दो प्रमुख कारण बताए हैं। एक तो यह कि हरिहर काका उनके पड़ोस में रहते हैं और दूसरा यह कि हरिहर काका लेखक को बचपन में बहुत प्यार करते थे। वे उसे अपने कंधे पर बैठाकर घुमाया करते थे। एक पिता

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

अपने पुत्र को जितना प्यार करता है, उससे कहीं अधिक वे लेखक को प्यार करते थे। बड़ा होने पर लेखक की पहली दोस्ती हरिहर काका से ही हुई। गाँव में इतनी गहरी दोस्ती उनकी और किसी से नहीं थी।

हमारे विचार से दोनों के परस्पर लगाव के अन्य कारण निम्नलिखित हो सकते हैं–

(i) हरिहर काका की कोई संतान नहीं थी। ऐसे व्यक्ति बच्चों की ओर अधिक आकर्षित होते हैं।

(ii) लेखक बचपन में बहुत होनहार रहा होगा, जिसके कारण हरिहर काका उसे इतना प्रेम करते थे।

(iii) हरिहर काका को लेखक के परिवार से अपने परिवार की अपेक्षा अधिक आत्मीयता मिली होगी।

प्रश्न 23 : हरिहर काका का अपने परिवार से मोहभंग क्यों हुआ? क्या उनका मोहभंग उचित था?

उत्तर : हरिहर काका की अपने परिवार के सदस्यों से मोहभंग की शुरूआत तब हुई, जब उनके भाइयों की पत्नियों, बहुओं और बच्चों ने उन्हें पूछना तक बंद कर दिया। एक बार जब वे बीमार हुए तो कोई उन्हें पानी देने तक भी नहीं आया। भाइयों के बच्चे घर में धमाचौकड़ी तो मचाते रहते थे, लेकिन उनकी बात नहीं सुनते थे। औरतें भी उन पर ध्यान नहीं देती थीं। उनके भाई तो खेतों में चले जाते थे; अतः उन्हें ज़रूरत की चीज़ें लेने के लिए स्वयं ही उठना पड़ता था। भाइयों की पत्नियाँ उन्हें खाने में बचा-खुचा, रूखा-सूखा भोजन ही देती थीं। ऐसे में उन्हें अपनी दोनों स्वर्गवासी पत्नियों की बहुत याद आती थी। हरिहर काका के मोहभंग को किसी भी तरह से अनुचित नहीं कहा जा सकता; क्योंकि यदि उनके भाइयों के परिवार के सदस्य उनकी बीमारी में भी देखभाल नहीं कर सकते थे तो फिर ऐसे परिवार का क्या लाभ। हरिहर काका के परिवार के सदस्यों को केवल उनकी संपत्ति अर्थात् ज़मीन-जायदाद से ही लगाव था, काका के प्रति उन्हें कोई लगाव नहीं था। ऐसे में उनका परिवार से मोहभंग हो जाना उचित ही था।

प्रश्न 24 : हरिहर काका के गूँगेपन का क्या कारण है? इस कहानी से आपको क्या शिक्षा मिलती है? *(CBSE 2015)*

उत्तर : हरिहर काका का अपने परिवार से बहुत मोह था। वे निःसंतान थे और उनकी पत्नी का भी देहांत हो चुका था, फिर भी वह अपने भाइयों के परिवार में बहुत अपनेपन से रह रहे थे। उन्हें अपने परिवार पर पूरा विश्वास था। लेकिन उनका परिवार स्वार्थी निकला। उनके भाइयों ने उनकी ज़मीन हड़पने के लिए उनके साथ मारपीट तक की। इससे उनका परिवार से मोहभंग हो गया। वे गाँव की धार्मिक संस्था की शरण में गए, वहाँ भी महंत ने उनके साथ अमानवीय व्यवहार किया। उसने काका की ज़मीन के लिए उनका अपहरण करवा लिया और उन्हें अनेक यातनाएँ दीं। इन घटनाओं के कारण हरिहर काका को बहुत सदमा पहुँचा। उन्होंने अपने भाइयों एवं निकट संबंधियों से इसकी उम्मीद नहीं की थी। सदमे के कारण ही हरिहर काका बिलकुल मौन हो गए थे।

इस कहानी से हमें यही शिक्षा मिलती है कि यह भौतिक दुनिया स्वार्थों से भरी हुई है। यहाँ सभी व्यक्ति स्वार्थी एवं लोलुप प्रवृत्ति के हैं। पारिवारिक संबंध उनके लिए अधिक मायने नहीं रखते हैं। स्वार्थ एवं (लालच) से परिपूर्ण इस संसार में व्यक्ति की कद्र नहीं होती है। हरिहर काका इसके ज्वलंत उदाहरण हैं। हमें ऐसी कुप्रवृत्ति से बचना चाहिए और मानवीय मूल्यों को बढ़ावा देना चाहिए।

प्रश्न 25 : हरिहर काका ने लेखक से किस विषय पर चर्चा की? इस चर्चा का क्या परिणाम निकला? *(CBSE 2016)*

उत्तर : हरिहर काका ने लेखक से एकांत में इस बात पर चर्चा की कि उन्हें अपने हिस्से की ज़मीन का क्या करना चाहिए; क्योंकि ठाकुरबारी के महंत और उनके भाई उनसे उनकी ज़मीन को हड़पने का प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि ज़मीन के लालच में एक ओर उनके भाई उनकी जान के पीछे पड़े हुए हैं। वहीं दूसरी ओर ठाकुरबारी के महंत ने परलोक का भय दिखाकर अपनी ज़मीन ठाकुरबारी के नाम करने को कहा। महंत की बात न मानने पर उनका अपहरण कर लिया गया और उनके साथ मारपीट भी की गई।

लेखक और हरिहर काका के बीच हुई चर्चा के उपरांत यह निर्णय हुआ कि जीते-जी अपनी जायदाद का स्वामी किसी और को बनाना बिलकुल ठीक नहीं होगा। चाहे वह अपना भाई या मंदिर का महंत ही क्यों न हो। इससे पूर्व जिन्होंने भी ऐसा किया है, उनका जीवन नर्क समान हो गया।

प्रश्न 26 : आप कैसे कह सकते हैं कि हरिहर काका संयुक्त परिवार के मूल्यों के प्रति एक समर्पित व प्रेरक व्यक्ति थे? पठित पाठ के आधार पर समझाइए। *(CBSE 2015)*

उत्तर : हरिहर काका का परिवार संयुक्त परिवार था। वे चार भाई थे। तीन भाइयों का भरा-पूरा परिवार था। हरिहर काका के पास पंद्रह बीघा ज़मीन थी। वे पत्नी की मृत्यु के बाद दूसरा विवाह भी कर सकते थे, लेकिन उन्होंने भाइयों के परिवार को अपना परिवार समझा और उनके साथ मिलकर रहने लगे। वे संयुक्त परिवार का महत्त्व समझते थे और उसे बनाए रखना चाहते थे। यही कारण था कि जब उनके भाई उन्हें मनाने ठाकुरबारी में आए तो वे मान गए और फिर वापस घर आ गए। महंत के बार-बार दबाव डालने पर भी अपनी ज़मीन ठाकुरबारी को नहीं दी और उन्हें बार-बार अपने भाइयों की ही याद आती रही। इससे सिद्ध होता है कि वे पारिवारिक मूल्यों के प्रति समर्पित थे।

प्रश्न 27 : आम आदमी की धर्म के प्रति अंध-श्रद्धा को धर्म के ठेकेदार किस रूप में भुनाते हैं? 'हरिहर काका' कहानी में काका किस प्रकार इसके शिकार हुए? व्यक्ति का वैज्ञानिक दृष्टिकोण उसे किस प्रकार इस प्रवृत्ति से बचा सकता है? *(CBSE 2015)*

उत्तर : आम आदमी धर्म-भीरू होता है। उसे अपने लोक-परलोक की बड़ी चिंता होती है। इसलिए वह धर्म में ही नहीं, बल्कि धर्म का मार्ग दिखाने वाले धर्मगुरुओं, साधु-संतों, महंतों में भी अंध-श्रद्धा रखता है। धर्म के ठेकेदार इसका अनुचित लाभ उठाते हैं। वे आम लोगों को मूर्ख बनाकर ठगते हैं और अपनी स्वार्थ-सिद्धि करते हैं। हरिहर काका भी एक आम आदमी थे। गाँव की ठाकुरबारी में उनकी भी अंध-श्रद्धा थी। महंत ने उन्हें अपनी चिकनी-चुपड़ी बातों में फँसाकर उनके भाइयों के विरुद्ध भड़काया और अपनी ज़मीन ठाकुरबारी के नाम करने के लिए उकसाया।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखने वाला व्यक्ति प्रत्येक कार्य को सोच-समझकर करता है। वह महंत जैसे लोगों की बातों में नहीं फँसता। वह सोचता है कि भगवान ज़मीन या धन-दौलत के भूखे नहीं, वे तो श्रद्धा से प्राप्त होते हैं। ज़मीन-जायदाद की आवश्यकता तो अपना पेट भरने के लिए मनुष्य को है। इस प्रकार की सोच रखने वाला व्यक्ति इन धर्म के ठेकेदारों के जाल में नहीं फँसता।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रश्न 28 : ठाकुरबारी की स्थापना किस उद्‌देश्य से की गई थी? वह क्या-क्या काम करती थी? क्या पाठ में उसने अपना उद्‌देश्य पूर्ण किया है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : ठाकुरबारी की स्थापना का उद्‌देश्य लोगों में भक्तिभावना जाग्रत करना तथा धर्म-विमुख लोगों को सही मार्ग पर लाना था। ठाकुरबारी में निरंतर भजन-कीर्तन चलता रहता था। प्रत्येक त्योहार की शुरूआत ठाकुरबारी से ही होती थी। होली में पहला गुलाल ठाकुर जी को ही लगाया जाता था। दीपावली का पहला दीप ठाकुरबारी में ही जलाया जाता था। जन्म, शादी आदि पर अन्न-वस्त्र की पहली भेंट ठाकुर जी पर ही चढ़ती थी। ठाकुरबारी के संत घर-घर जाकर पूजा-पाठ और कथावाचन करते थे।

पाठ में हरिहर काका के साथ महंत ने जो व्यवहार किया, उससे पता चलता है कि यह संस्था अपने मूल उद्‌देश्य को पूरा नहीं कर रही थी, बल्कि यह भ्रष्टाचार और अनाचार का अड्डा बन गई थी और समाज को पतन की ओर ले जाने का कार्य कर रही थी।

प्रश्न 29 : हरिहर काका के विषय में कौन-सी चार खबरें प्रचलित हैं, जिनसे सारा गाँव आतंकित है?

उत्तर : हरिहर काका के विषय में निम्नलिखित चार खबरें प्रचलित हैं, जिनसे सारा गाँव आतंकित है–

(i) पहली खबर यह है कि हरिहर काका के भाई और महंत इस बात के लिए अफ़सोस कर रहे हैं कि अँगूठे के निशान लेने के बाद उन्होंने हरिहर को खत्म क्यों नहीं कर दिया। बात आगे न बढ़ती।

(ii) दूसरी खबर यह है कि हरिहर काका मरेंगे तो उनका अंतिम संस्कार करने के लिए हरिहर काका के भाइयों और ठाकुरबारी के संत-महंतों के बीच खूनी संघर्ष होगा।

(iii) तीसरी खबर यह है कि हरिहर काका के मरने के बाद उनकी ज़मीन पर कब्ज़ा करने के लिए उनके भाइयों ने मशहूर डाकू बुटन सिंह को तैयार कर लिया है।

(iv) चौथी खबर यह है कि महंत जी ने निर्णय लिया है कि हरिहर काका की मृत्यु के बाद देश के कोने-कोने से वह साधुओं और नागाओं को बुलाएँगे।

प्रश्न 30 : 'हरिहर काका' कहानी के आधार पर बताइए कि एक महंत से समाज की क्या अपेक्षा होती है। उक्त कहानी में महंतों की भूमिका पर टिप्पणी कीजिए। उत्तर लगभग 150 शब्दों में लिखिए। ***(CBSE 2018)***

उत्तर : एक धार्मिक संस्था का मुखिया होने के नाते महंत की समाज में बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। लोग उसके प्रति इसलिए श्रद्‌धा-भाव रखते हैं; क्योंकि उनका मानना होता है कि वह एकमात्र ऐसा व्यक्ति है, जो निःस्वार्थ भाव से समाज-सेवा में लगा रहकर समाज को नई दिशा की ओर ले जाता है। समाज उससे अपेक्षा रखता है कि वह समाज में व्याप्त कुरीतियों, अंध-विश्वासों, आपसी मतभेदों, पारिवारिक कलहों अथवा विवादों में उनका मार्गदर्शन करके उचित दिशा-निर्देश देकर उनकी भ्रांतियों को दूर करे। उन्हें उचित-अनुचित का ज्ञान कराए। महंत को लोग क्योंकि ईश्वर का प्रतिनिधि मानते हैं; अतः उसकी बातों का प्रभाव भी समाज के लोगों पर अधिक होता है। इसलिए समाज को उससे अपेक्षा होती है कि वह लोगों में नैतिकता, देशभक्ति, मानवता, प्रेम, सौहार्द, विश्वबंधुत्व, पारस्परिक एकता-अखंडता, संस्कृति-सभ्यता की रक्षा और उसके प्रचार-प्रसार हेतु लोगों को अपना जीवन समर्पित करने के लिए प्रेरित करे। वह उन्हें समझाए कि हम सभी एक ही ईश्वर की संतान हैं, इसलिए आपस में भाई-भाई हैं। संसार में व्यक्ति न कुछ लेकर आता है और न अपने साथ कुछ लेकर जाता है। उसके द्‌वारा प्राणिमात्र के कल्याण के लिए किए गए कार्यों से ही संसार में उसकी यश-कीर्ति फैलती है। यही उसकी वास्तविक पूँजी होती है। इसलिए व्यक्ति को सर्वस्व समाज और प्राणिमात्र की सेवा में लगा देना चाहिए, जो महंत समाज की इन अपेक्षाओं पर खरा उतरता है, उसकी लोग ईश्वर की तरह पूजा करते हैं। इसके विपरीत आचरण करने वाले महंतों को समाज अंततः उनके पद से हटाकर उनकी गरिमा को धूल-धूसरित करने में भी देरी नहीं लगाता।

प्रश्न 31 : हरिहर काका के विरोध में महंत और पुजारी ही नहीं उनके भाई भी थे। इसका कारण क्या था? हरिहर काका उनकी राय क्यों नहीं मानना चाहते थे? विस्तार से समझाइए। ***(CBSE 2019)***

उत्तर : हरिहर काका के विरोध में महंत ही नहीं उनके भाई भी थे। इसका कारण उनकी पंद्रह बीघा ज़मीन थी। महंत उस ज़मीन को ठाकुरबारी के नाम कराना चाहता था। काका के ऐसा करने से मना करने पर उसने उनका अपहरण करवा लिया तथा उनसे जबरदस्ती कागज़ों पर अँगूठा लगवा लिया। उसने काका को अनेक यातनाएँ भी दीं। हरिहर काका के भाइयों ने भी उनके साथ ऐसा ही व्यवहार किया। उन्होंने काका पर ज़मीन उनके नाम कर देने का दबाव डाला। जब काका ने ऐसा करने से मना कर दिया तो भाइयों ने उनके साथ मारपीट की, उन्हें रस्सियों से बाँध दिया और जान से मारने का प्रयत्न भी किया।

काका, महंत और अपने भाइयों की राय इसलिए नहीं मानना चाहते थे, क्योंकि वे समाज की वास्तविकता को जानते थे। उन्हें पता था कि जब तक मनुष्य के पास धन-संपत्ति है, तब तक ही मित्र-संबंधी उसकी परवाह करते हैं। धन-संपत्ति न रहने पर मनुष्य को कोई नहीं पूछता। वे कुत्ते जैसे ज़िंदगी नहीं जीना चाहते थे। इसलिए जीते-जी अपनी ज़मीन महंत और अपने भाइयों को नहीं देना चाहते थे।

प्रश्न 32 : कल भी उनके यहाँ गया था, लेकिन न तो वह कल ही कुछ कह सके और न आज ही। दोनों दिन उनके पास मैं देर तक बैठा रहा, लेकिन उन्होंने कोई बातचीत नहीं की। जब उनकी तबीयत के बारे में पूछा तब उन्होंने सिर उठाकर एक बार मुझे देखा फिर सिर झुकाया तो दुबारा मेरी ओर नहीं देखा। हालाँकि उनकी एक ही नज़र बहुत कुछ कह गई। जिन यंत्रणाओं के बीच वह घिरे थे और जिस मनःस्थिति में जी रहे थे, उसमें आँखें ही बहुत कुछ कह देती हैं, मुँह खोलने की ज़रूरत नहीं पड़ती।

हरिहर काका की पंद्रह बीघे ज़मीन उनके लिए जी का जंजाल बन गई। कथन के आलोक में अपने विचार व्यक्त कीजिए।

(CBSE SQP 2021 Term-2)

उत्तर : 'हरिहर काका की पंद्रह बीघा ज़मीन उनके लिए जी का जंजाल बन गई।' यह कथन सत्य है। इस ज़मीन के लालच में ठाकुरबारी के महंत ने पहले काका को इस बात के लिए बहकाया कि यह ज़मीन ठाकुरबारी के नाम कर दें। जब काका इस बात के लिए तैयार नहीं हुए तो महंत ने उनका अपहरण करवा लिया और उन्हें ठाकुरबारी के एक कमरे में बंद करके तरह-तरह की यातनाएँ दीं। जब हरिहर काका के भाइयों को इस बात का पता चला तो उन्होंने पुलिस की सहायता से काका को महंत के चंगुल से छुड़ाया और घर ले आए। घर लाकर भाइयों ने भी काका पर पंद्रह बीघा ज़मीन उनके नाम

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

करने का दबाव बनाया। जब काका ने जीते-जी ज़मीन नाम करने से मना कर दिया तो भाइयों ने भी काका के साथ वही व्यवहार किया जो महंत ने किया था। हरिहर काका ने किसी तरह अपने आप को भाइयों की कैद से मुक्त किया। अब वे अकेले रहते हैं। उनकी मनःस्थिति ठीक नहीं है। वे किसी से बोलते नहीं और अनेक यंत्रणाओं से घिरे हैं। उनकी यह हालत पंद्रह बीघा ज़मीन के कारण हुई है, जो उनके जी का जंजाल बन गई है।

प्रश्न 33 : हरिहर काका के प्रति उनके परिवार के व्यवहार पर अपने विचार लिखिए और यह भी बताइए कि बुजुर्गों के प्रति कैसा व्यवहार करना चाहिए? *(CBSE 2022 Term-2)*

उत्तर : हरिहर काका के प्रति उनके परिवार का व्यवहार अच्छा नहीं था। काका ने अपनी पंद्रह बीघा ज़मीन अपने भाइयों को दे रखी थी, लेकिन भाइयों की पत्नियाँ काका की सही देखभाल नहीं करती थीं। उन्हें रूखा-सूखा भोजन दिया जाता था। भाइयों ने भी वृद्ध काका पर ज़मीन उनके नाम कर देने का दबाव बनाया। जब काका ने ऐसा नहीं किया तो भाइयों ने उनके साथ मार-पीट की। एक बुजुर्ग के प्रति परिवार का ऐसा क्रूरतापूर्ण व्यवहार उचित नहीं है।

हमें वृद्धों के प्रति सहानुभूति और सम्मान का व्यवहार करना चाहिए। उनके भोजन और वस्त्र आदि की उचित व्यवस्था करनी चाहिए। बीमार होने पर उनके लिए दवाई आदि का प्रबंध करना चाहिए। कुछ देर उनके पास बैठकर बातें करनी चाहिए, ताकि वे स्वयं को अकेला और उपेक्षित महसूस न करें।

प्रश्न 34 : 'हरिहर काका' कहानी में आपने पढ़ा कि हरिहर काका का, महंत और उसके साथियों ने अपहरण कर लिया। कल्पना कीजिए कि आप एक पत्रकार हैं। आपको हरिहर काका के, महंत की गिरफ़्त में होने का पता लगता है। आप किन बातों का खुलासा करेंगे और दूसरे लोगों पर उसका क्या प्रभाव पड़ेगा? *(CBSE 2022 Term-2)*

उत्तर : बड़ागाँव, उत्तर प्रदेश।

यहाँ गाँव में एक सनसनी खेज मामला सामने आया है। गाँव की ठाकुरबारी के महंत ने अपने साथियों के साथ मिलकर वृद्ध हरिहर काका का अपहरण कर लिया है। इसका कारण काका की पंद्रह बीघा जमीन है। महंत काफ़ी दिनों से काका पर अपनी ज़मीन ठाकुरबारी के नाम कर देने का दबाव बना रहा था। जब काका ने ऐसा नहीं किया तो महंत ने उनका अपहरण कर लिया। काका को ठाकुरबारी के एक कमरे में बंद किया गया है और तरह-तरह की यातनाएँ दी जा रही हैं। हमारे इस खुलासे के बाद संभव है कि पुलिस काका को महंत के चंगुल से छुड़ा ले। काका महंत के चंगुल से अवश्य छूट जाएँगे, लेकिन इस घटना के बाद लोग उन संतों और महंतों पर विश्वास करना छोड़ देंगे, जिन्हें वे ईश्वर की तरह पूजते हैं। जिनके पास वे अपने दुःख निवारण और मार्गदर्शन के लिए दौड़े चले आते हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in